TOPIC – SECONDARY GROUP (द्वितीयक समूह)

Sol – द्वितीयक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Secondary group) — द्वितीयक समूह प्राथमिक समूह का ठीक उल्टा है अर्थात जिन विशेषताओं का दर्शन हम प्राथमिक समूहों में होता है उनमें कोई भी विशेषता द्वितीयक समूह में नहीं पायी जाती है। द्वितीयक समूह इसी अर्थ में प्राथमिक समूहों के विपरीत कहा है। द्वितीयक समूह के उदाहरण के रूप में समुदाय, राष्ट्र, भीड़, वर्ग, प्रजाति आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

ऑगबर्न तथा निमकॉफ (Ogburn and Nimkoff) ने लिखा है, "जो समूह घनिष्टता के अभाव वाले अनुभवों का प्रदान करते हैं, उन्हें द्वितीयक समूह कहा जाता है।"

चार्ल्स कूले (Charles Cooley) — के अनुसार, "द्वितीयक समूह ऐसे समूह हैं जिनमें घनिष्ठता का पूर्णतया अभाव होता है और सामान्यतः इन विशेषताओं का भी अभाव होता है जो अधिकांशतया प्राथमिक तथा अर्द्ध-प्राथमिक समूहों में पायी जाती है।"

द्वितीयक समूहों की विशेषताएँ (Characteristics of Secondary group) —

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम द्वितीयक समूहों की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कर सकते हैं —

(1) बड़ा आकार (Large Size) — इसका आकार बहुत बड़ा होता है। यदि वास्तव में देखा जाय तो स्पष्ट होगा कि द्वितीयक समूहों में सदस्यता असीमित होती है। यही कारण है कि इन समूहों के सदस्यों के लिए एक दूसरे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव नहीं होता।

(2) अप्रत्यक्ष सम्पर्क (Indirect Relation) — द्वितीयक समूहों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के सम्बंध हो सकते हैं, किन्तु विशेषकर अप्रत्यक्ष सम्पर्क ही होता है।

यह अप्रत्यक्ष सम्बंध, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, डाक इत्यादि के माध्यम से स्थापित होता है कोई विशेष व्यक्ति एक कमेटी का सदस्य हो सकता है जो कभी किसी स्थान पर एकत्रित न होकर केवल डाक के द्वारा कार्य करते हैं। कुछ समीतियाँ Pen friendship को बढ़ाना देती हैं। इसमें सुदूर अमेरिका में रहने वाला व्यक्ति अच्छा दोस्त का सम्बंध स्थापित कर सकता है।

(3) **अवैयक्तिक सम्बंध (Impersonal Relation)**

द्वितीयक समूह के सदस्यों के बीच पारस्परिक सम्बंध अवैयक्तिक होते हैं। हो सकता है कि इन समूहों के सदस्य रोज एक-दूसरे से मिलें और अनुभवों का आदान-प्रदान करें, फिर वे एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं जैसे एक कारखाना में बहुत से कारीगर काम करते हैं लेकिन एक दूसरे को जानते नहीं हैं इसका मुख्य वजह है बड़ा आकार होना। 'बोगार्डस ने लिखा है कि विशालता के कारण ही द्वितीयक समूहों के सदस्यों का पारस्परिक सम्बंध 'छुओ और चले जाओ टाइप' (Touch and go type) का होता है। उदाहरणार्थ, सिनेमा के बुकिंग क्लर्क का बैंक खजांची के साथ हमारा सम्बंध आमने-सामने का होते हुए भी इतने कम समय के लिए होता है कि उसे छुओ और चले जाओ का प्रकार का ही कहा जायेगा। द्वितीयक समूहों की एक प्रमुख विशेषता यही अवैयक्तिकता (Impersonality) है।

(4) **घनिष्ठ सम्बंधों का अभाव (Lack of Intimate Relations)** — चूँकि द्वितीयक समूहों का आकार बहुत बड़ा होता है चूँकि इसमें सम्बंध क्षणिक, अस्थायी तथा छुओ और चले जाओ किस्म का होता है, इसलिए सदस्यों में घनिष्ठता पनप ही नहीं पाती। बात यह है कि घनिष्ठता को पनपने के लिए यह आवश्यक है कि सम्बंध निरंतर तथा स्थायी हो परन्तु द्वितीयक समूहों में तो सम्बंध आकस्मिक भी होते हैं। ओगबर्न तथा निमकॉफ के शब्दों में, "द्वितीयक समूहों के अनुभवों का निचोड़ सम्बंधों का आकस्मिक होना है।"

(5) **उद्देश्यों का विशेषीकरण (Specialization of Interests)** — द्वितीयक समूहों की एक और प्रमुख विशेषता यह है कि ये समूह किन्हीं विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं जैसे उदाहरणार्थ, किसी भी कारखाने का उद्देश्य आर्थिक हित की पूर्ति या आर्थिक उत्पादन करना होता है। इसी प्रकार किसी भी विश्वविद्यालय की स्थापना शिक्षा-सम्बंधी कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है।

यही कारण है कि किंग्सले यंग ने द्वितीयक समूहों को 'विशेष स्वार्थ-समूह' की संज्ञा दी है।

(6) जान-बूझकर स्थापना (Deliberate establishment) द्वितीयक समूहों की स्थापना प्राथमिक समूहों की अपेक्षा अधिक जान-बूझकर तथा चैतन्य रूप (consciously) की जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि ये 'विशेष स्वार्थ-समूह' होते हैं अर्थात् ये समूह विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं। जब हमारा कोई विशेष उद्देश्य होता है तो यह मानी हुई बात है कि हम उस विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए जान-बूझकर तथा चैतन्य रूप से किन्हीं उपायों को अपनाते हैं। इसी की एक अभिव्यक्ति (expression) द्वितीयक समूह है।

(7) उद्देश्यों की भिन्नता (No identity of ends)- यह पहले ही कहा जा चुका है कि द्वितीयक समूहों में सदस्यों की संख्या अधिक होती है; इसलिए इनके बीच व्यक्तिगत तथा घनिष्ट सम्बंध नहीं होते। इसलिए ये सदस्य एक दूसरे को न तो पूरी तरह समझ पाते हैं और नहीं उन्हें 'अपना' पाते हैं। लोग अपने-अपने हितों की पूर्ति में लगे रहते हैं और कोई भी एक दूसरे को सुख-दुःख का अपना नहीं मानता। द्वितीयक समूहों में सम्बंध अधिक औपचारिक (Formal), आकस्मिक (casual) तथा अवैयक्तिक (Impersonal) होते हैं। यही कारण है कि इन समूहों में किसी भी एक सदस्य का व्यक्तित्व सम्पूर्ण समूह के व्यक्तित्व में घुल-मिल नहीं पाता और विभिन्न सदस्यों के बीच भिन्नता बनी रहती है।

(8) औपचारिक सम्बंध (Formal Relations)- द्वितीयक समूहों के सदस्यों का सम्बंध औपचारिक होता है। इसका अर्थ यह है कि इस प्रकार के समूहों के सदस्यों का पारस्परिक सम्बंध कुछ निश्चित नियमों (codes), कानूनों (laws) परम्पराओं तथा कार्य-प्रणालियों के अनुसार नियंत्रित तथा परिचालित होता है। इसका प्रमुख कारण यह होता है कि द्वितीयक समूहों में सदस्यों की संख्या अधिक होती है और वे सभी अपने-अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे रहते हैं। इस कारण उनके व्यवहारों को नियंत्रित तथा व्यवस्थित रखने के लिए कुछ निश्चित नियमों, परम्पराओं आदि की आवश्यकता होती है। इन्हीं नियमों, कानूनों आदि के कारण सदस्यों का सम्बंध औपचारिक होता है तथा द्वितीयक समूह का कोई भी सदस्य पूर्ण रूप से सम्पूर्ण हृदय से इसके कार्यों में भाग नहीं ले पाता।

(8) स्वार्थसिद्धि तथा प्रतिस्पर्धा पर बल (Emphasis on Interest and Competition) — द्वितीयक समूहों में सदस्यों की अधिकता तथा घनिष्ठता के अभाव के कारण 'हम की भावना' पनप ही नहीं पाती। इसलिए सभी सदस्य अपने हितों की अधिकतम पूर्ति के लिए आपस में प्रतिस्पर्द्धा करते रहते हैं। द्वितीयक समूहों में समूह के सामान्य हितों का ध्यान न रखकर व्यक्तिगत हितों को प्रधानता दी जाती है।

समाप्त